कृषि किरण अंक-11, जून 2021: पृष्ठ: 29-32
http://saaer.org.in

आलू उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण जानकारियाँ एवं क्रियाएँ

प्रिंस कुमार, जगदेव शर्मा, राज कुमार, विजय कुमार दुआ एवं मनोज कुमार
भाकृअनुप के0आ0अनु0के0, जालंधर

आज के युग मे आलू दुनिया की तीसरी मुख्य भोज्य फसल है। भारत में आलू एक प्रमुख सब्जी फसल है जिसे बीज आलू उत्पादन, दैनिक उपभोग और प्रसंस्करण के उद्देश्य से उगाया जाता है। आलू की फसल का 85 प्रतिशत क्षेत्रफल सिंधु-गंगा के मैदानी इलाकों मे तथा शेष 15 प्रतिशत पहाड़ी एवं पठारी इलाकों मे उगाया जाता है। अत: अधिक एवं गुणवतापूर्ण आलू उत्पद्दन के लिए महत्वपूर्ण जानकारी एवं क्रियाओ का बोध होना बहुत जरूरी हो जाता है। भारत में आलू उत्पादन के लिए जरूरी पहलुओ का वर्णन निम्नलिखित अनुभागों में दर्शाया गया है।

जलवायु संबंधी आवश्यकताएँ:

आलू अपेक्षाकृत ठंडे मौसम में उगाई जाने वाली फसल है जिसकी बुआई के समय वातावरण का अधिकतम तापमान 32° सेल्सियस से ज्यादा नहीं होना चाहिए। साथ ही आलू कंद बनने के लिए रात्रि में तापमान 20° सेल्सियस से कम होना चाहिए। आलू कंदों के विकास हेतु 10 से 30° सेल्सियस के बीच का तापमान सबसे उपयुक्त होता है।

मिट्टी की किस्म:

आलू फसल की अच्छी पैदावार के लिए अच्छी तरह से जुताई की हुई रेतीली मिट्टी एवं मध्यम दोमट मिट्टी सर्वाधिक उपर्युक्त होती है।

चित्र-1: आलू की फसल का दृश्य

खेत की तैयारी:

आलू का विकास मिट्टी के नीचे होने के कारण खेत की अच्छी जुताई होना अंतयन्तावश्यक है। यदि मिट्टी में नमी का स्तर कम हो तो जुताई के समय ढेले बन सकते है जो कि आलू के विकास में बाधक होते है। इन परिस्थितियों में पूर्व रोपण सिंचाई आवश्यक हो जाती है। भारी मिट्टी के खेत में जुताई करते समय ढेले बनने से

रोकने के लिए नमी के स्तर का खास ध्यान रहना चाहिए।

बुआई के लिए दूरी

आलू की बुआई के लिए 67 X 20 सेंटीमेटर की दूरी सबसे उपयुक्त होती है।

बीज दर:

आलू की बुआई के लिए 30-55 मिलीमीटर या 30-40 ग्राम वजन का बीज आलू सर्वाधिक उपयुक्त होता है तथा इस आकार के आलुओं की लगभग 20-30 कुंतल मात्रा एक हेक्टेयर खेत के लिए पर्याप्त होती है।

बीज तैयार करना:

आलू की बुआई के लिए बीज आलू को शीतगृह से कम से कम 10 दिन पहले अवश्य निकाल ले। तेला व सफ़ेद मक्खी के शुरुवाती समय पर संक्रमण से बचाव के लिए बुआई से पहले बीज आलू को इमिडाक्लोप्रिड* 200 एस एल 0.04% (4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी) की दर से घोल बना कर 10 मिनट तक उपचार करें।

बुआई का तरीका:

खेत मे निर्धारित मात्रा मे खाद/ उर्वरकों के मिश्रण डालने के बाद उथली हुई सीधी मेढ़े बना कर हाथ से आलुओं की बुआई की जा सकती है तथा बाद में ट्रैक्टर द्वारा मिट्टी चढ़ाई जा सकती है। आजकल ट्रैक्टर चालित अर्ध-स्वचालित या पूर्ण स्वचालित आलू बुआई संयंत्र भी प्रचलन में है जिसके द्वारा कई कार्य एक ही बार में सम्पन्न किए जा सकते हैं जैसे मेढ़ों का आकार देना, खाद डालना, आलू की बुआई, मिट्टी चढ़ाना इत्यादि।

उर्वरकों का प्रयोग:

मिट्टी की उर्वरता एवं अधिकतम उत्पादन के लिए कार्बनिक, रसायनिक एवं जैव उर्वरकों का एकीकृत/ संतुलित प्रयोग करना चाहिए तथा मृदा परीक्षण के पश्चात ही उर्वरकों की उचित मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। इसके बाद उर्वरकों का इस्तेमाल इलाके के लिए की गयी सिफ़ारिसो के अनुसार ही करना चाहिए। बुआई के समय, नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस, पोटेशियम की पूरी मात्रा को खेत में ड्रिल/ छिड़काव विधि द्वारा तथा शेष बची हुई नाइट्रोजन की आधी मात्रा आलुओं पर मिट्टी चढ़ाने के समय डालें।

मिट्टी चढ़ाना:

आलू की बुआई के लगभग 25-30 दिन बाद नाइट्रोजन की आधी मात्रा के साथ फावड़े या रिजर द्वारा मिट्टी चढ़ाई जानी चाहिए।

चित्र-2: आलू की फसल का मिट्टी चढ़ाने के बाद का दृश्य

खरपतवार नियंत्रण:

आलू की फसल के लिए शुरुआत के 25-30 दिन खरपतवार नियंत्रण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। खेत में खरपतवार उगने से पहले मैट्रीबूजीन* 70 डब्लू पी, 0.75-1.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। इससे वार्षिक घास एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार काफी हद तक समाप्त हो जाते हैं। मिट्टी चढाने के बाद, आलू के पोधों का फैलाव ही खरपतवार नियंत्रण कर देता हैं।

चित्र-3: भाकृअनुप- के०आ०अनु०के०, जालंधर के अनुसंधान प्रक्षेत्र पर आलू की स्वस्थ फसल

सिंचाई:

आलू में जड़ कम गहरी होती है इसलिए पूरे फसल चक्र के लिए पानी की उपलब्धता आवश्यक है। अच्छे अंकुरण के लिए रौनी करना भी जरूरी है अन्यथा बुआई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करनी अंतयंत आवश्यक हो जाती है। उसके बाद रेतीली दोमट मिट्टी में 7-10 दिन के अंतराल पर तथा भारी मिट्टी में 10-12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कभी भी आलू की मेढ़ों को पानी में डूबने न दे। आलू की खुदाई के 10-12 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें।

आलुओं की खुदाई:

जब खेत मे पर्याप्त नमी हो तब बेलों की कटाई के 15-20 दिन बाद आलुओं की खुदाई की जाती है। उसके बाद आलुओं को छायादार जगह पर बिछाकर सूखने के लिए रखे, तत्पश्चात छिलके को परिपक्व होने के लिए 10-15 दिनो तक छाया में ढेर बनाकर रख देते है।

चित्र-4: खुदाई उपरांत आलू के कंद

खुदाई उपरांत कार्यकलाप:

खुदाई के बाद ढेरों में से कटे, फटे, छिले हुए एवं बीमार आलू छाँट कर अलग कर देते हैं। बाजार की आवश्यकतानुसार 55 मिलिमीटर या 125 ग्राम से अधिक वजनी आलुओं को बड़े ग्रेड में, 30-35 मिलिमीटर या 25-125 ग्राम को मध्यम आकार के रूप में और सबसे छोटे के 30 मिलिमीटर से कम या 25 ग्राम से कम वजन वाले आलुओं अलग करना चाहिए।